11

पिन्तेकुस्त और उसके बाद

(प्रेरितों 2)

प्रेरितों 2 में वर्णित पिन्तेकुस्त का यहूदी पर्व यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने (फसह) के पचास दिन बाद और उसके स्वर्ग में उठा लिए जाने के केवल दस दिन बाद आया। पिन्तेकुस्त मूलतया गेहूं की कटाई की पहली उपज का जश्न मनाने के लिए था; पर बाद में यह सीनै पर्वत पर मूसा की व्यवस्था दिए जाने के साथ जुड़ गया (कोई नहीं जानता कि कैसे और क्यों)। यह परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा के नवीनीकरण का समय बन गया। प्रेरितों 2 अध्याय वाला पिन्तेकुस्त मसीहियत के आरम्भ होने और बढ़ने में विशेष महत्व रखता है, इतना अधिक कि बाइबल प्रकाशन के स्कोप को समझने के लिए इस वचन पाठ को मुख्य मानना आवश्यक है।

यह विशेष पिन्तेकुस्त इतना महत्वपूर्ण क्यों था? ''पिन्तेकुस्त का दिन'' क्या था?

इन प्रश्नों के दो सामान्य उत्तर दिए जाते हैं। पहला, कुछ लोग तुरन्त उत्तर देते हैं कि पिन्तेकुस्त का दिन पवित्र आत्मा के आने और भाषाओं के दानों के दिए जाने के बारे में है। पिन्तेकुस्त का दिन इस विशेष दान दिए जाने से इतना जुड़ा हुआ है कि आप ऐसा करने वालों को ''पैन्टिकॉस्टल'' और उसकी लहर को ''पैन्टिकॉस्टलवाद'' कहते हैं।

प्रेरितों 2 अध्याय वाले पिन्तेकुस्त के महत्व पर आमतौर पर दिया जाने वाला एक और उत्तर यह है कि यह दिन ''कलीसिया का जन्मदिन'' है, यानी यह वह दिन है, जब आधिकारिक रूप में कलीसिया अस्तित्व में आई थी।

जैसा कि सरसरी तौर पर पढ़ने से भी पता चल जाएगा, प्रेरितों 2 अध्याय में ये दोनों विषय बड़े महत्वपूर्ण हैं। परन्तु वास्तव में दोनों में से एक भी पाठ का मुख्य फोकस नहीं है, परन्तु वास्तव में प्रेरितों 2 का मुख्य फोकस यीशु और वह उद्धार है, जिसे वह देता है। पिन्तेकुस्त का बड़ा महत्व है क्योंकि इसी दिन पहली बार, यीशु का सुसमाचार अपनी पूरी पूर्णता में सुनाया गया था। उससे पहले यीशु के क्रूस पर पढ़ाए जाने, जी उठने और पिता के पास ऊपर उठाए जाने का ''पूर्ण सुसमाचार'' नहीं सुनाया गया था। यह सुनाया जाना पहली बार प्रेरितों 2 अध्याय में हुआ था।

बेशक आत्मा के आने और कलीसिया की स्थापना के विषयों का यीशु का प्रचार किए जाने से गहरा सम्बन्ध है। आत्मा के आने से यीशु का प्रचार करने की सामर्थ मिली और प्रचार के परिणामस्वरूप कलीसिया स्थापित हुई। आज भी प्रेरितों 2 अध्याय का मुख्य फोकस सुसमाचार और पिन्तेकुस्त की वह घटना ही है।

प्रचार के लिए सामर्थः आत्मा का आना (2:1-21)

स्वर्ग में ऊपर उठा लिए जाने से पूर्व यीशु ने अपने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की थी, ''... थोड़े

दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (प्रेरितों 1:5)। उसने उनसे यह भी कहा था, ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और सारे यहूदिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे'' (1:8)। प्रेरितों को जी उठे यीशु का प्रचार करने के लिए सामर्थ मिलनी थी और वह सामर्थ पवित्र आत्मा से आनी थी, जिससे उन्हें ''बपतिस्मा दिया'' जाना (यानी ''अभिभूत'' होना या ''डूब'' जाना था, जो स्पष्टतया इस शब्द का प्रतीकात्मक उपयोग है)।

प्रेरितों 2:1-13 में वर्णन है कि यह कैसे हुआ। जब सब प्रेरित एक घर में इकट्ठे बैठे थे। इसके अलावा ''आग की सी जीभें'' (आयत 3) भी दिखाई दीं, जो स्पष्टतया प्रत्येक प्रेरित के सिर के ऊपर पर ठहरी थीं। यह होने पर वे ''पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे'' (आयत 4)। यह हलचल होने से लोगों की बहुत भीड़ लग गई। इस पर प्रेरित स्पष्टतया बाहर निकल गए, क्योंकि भीड़ को पता चल गया कि क्या हो रहा है और पतरस ने इकट्ठी हुई भीड़ से बात की। उसके बाद जो कुछ हुआ, उससे वहां जमा भीड़ बड़ी उलझन में पड़ गई। हर व्यक्ति प्रेरितों को उसकी अपनी भाषा में बोलते सुन सकता था, चाहे बोलने वाले सभी लोग स्पष्ट रूप में गलीली थे, जिन्हें आमतौर पर इतनी भाषाएं नहीं आती थीं। प्रेरितों के काम पुस्तक के लेखक लूका ने उन विभिन्न स्थानों का संकेत देते हुए, जहां से यहूदी और यहूदी यह ग्रहण करने वाले लोग फसह और पिन्तेकुस्त के पर्वों को मनाने के लिए आए थे, वहां उपस्थित लोगों में से कुछ की राष्ट्रीयता बताई गई है। उन्होंने प्रेरितों को ''अपनी-अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा'' सुनी थी (प्रेरितों 2:11)। उनमें इस घटना के अर्थ पर काफ़ी चर्चा हुई, जिसमें कइयों ने यह निष्कर्ष निकाला कि प्रेरितों ने पी रखी है।

हम इस सब की व्याख्या कैसे करें? पहले तो हमें ध्यान देना चाहिए कि आत्मा के आने का उद्देश्य भाषाओं के दान देना नहीं था। आयतें 2 और 3 संकेत देती हैं कि आत्मा के आने के साथ दो अतिरिक्त बातें आंधी और ''आग की सी जीभें'' जुड़ी हुई थीं। जीभों पर विशेष रूप से फोकस करने का कोई कारण है। दूसरा, विभिन्न भाषाओं का बोला जाना[1] अपने आप में लक्ष्य नहीं, बल्कि आत्मा की उपस्थिति का प्रमाण है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि अन्य भाषाओं में प्रेरितों के बोलने (आंधी की आवाज़ और आग के दृश्य के साथ) का लोगों द्वारा कोई अर्थ निकाले जाने से पहले, पतरस द्वारा उसकी व्याख्या करना आवश्यक था। जब तक पतरस ने नहीं बताया कि वे योएल भविष्यवक्ता की भविष्यवाणी को पूरा होने को देख रहे हैं (योएल 2:28-32), लोगों को पता नहीं था कि जो कुछ वे देख और सुन रहे थे, उसे क्या समझें। प्रेरितों का अन्य भाषाओं में बोलना किसी बड़े महत्व की बात की ओर संकेत कर रहा था।

आत्मा का बहाया जाना यदि मुख्यतया अन्य भाषाओं के लिए नहीं बना, तो यह किसके लिए था? *पहले तो आत्मा प्रेरितों को यीशु के जी उठने के गवाहों के रूप में बल देने आया।* सुसमाचार के विवरणों के अन्त में प्रेरित लोग उस सब से जो उन्होंने देखा व सुना था, निराशा और उलझन में पड़े थे (लूका 24:19-21; प्रेरितों 1:6, 7)। यीशु के जी उठने के बाद के दर्शनों से भी उन्हें अपने मिशन का स्पष्ट अर्थ, या कम से कम इच्छा या इसे पूरा करने की योग्यता नहीं थी। परन्तु यीशु ने वायदा किया था कि जब आत्मा आएगा तो वह उन्हें ''सब सत्य का मार्ग''

बताएगा और "आने वाली बातें ... बताएगा" (यूहन्ना 16:13)। पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के आने पर, प्रेरितों ने यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और जी उठने की घोषणा करने में दृढ़ता दिखाई। इससे पहले उनमें ऐसी दिलेरी नहीं थी, यह हर स्वाभाविक व्याख्या से बढ़कर (जैसा कि 2:36 में पतरस की निडरता से आरोप लगाने में देखा जाता है)।

दूसरा, *आत्मा इस्राएल की बहाली के युग का आरम्भ करने के लिए उतरा।* पिन्तेकुस्त वाली घटना की व्याख्या के लिए पतरस ने आयतों 16 से 21 में योएल भविष्यवक्ता को उद्धृत किया। इस उद्धरण और इसके मूल संदर्भ का पूरा प्रभाव पाने के लिए हमें योएल की पूरी पुस्तक पढ़नी होगी। यह निराशा और पराजित इस्राएल के लिए भविष्यवाणी का संदेश था, जिसमें उनसे वायदा किया गया था कि उनके साथ परमेश्वर का सम्बन्ध अभी खत्म नहीं हुआ है। योएल ने घोषणा की कि भविष्य में किसी समय बहाली का दिन होगा। बहाली का वह युग "अन्त के दिनों" में (प्रेरितों 2:17; योएल 2:28 में केवल "उन बातों के बाद" है) आत्मा के आने और "सब मनुष्यों" के लिए आत्मा की उपलब्धता के द्वारा आरम्भ होना था।

योएल ने बहाली के समय भविष्यवाणी के नया होने की बात की। अन्तर-नियम (पुराने नियम के अन्त और यीशु के आगमन के बीच का समय) युग से ही यहूदी मत यह मानता था भविष्यवाणी की असल आवाज़ बन्द हो चुकी है। आमतौर पर माना जाता था कि परमेश्वर की ओर से बातचीत मसीहा के आगमन और परमेश्वर के आत्मा के बहाए जाने पर ही होगी। पुराने नियम में आत्मा का दान नियम न होकर एक अपवाद था। औसतन यहूदियों को उस प्रकार से पवित्र आत्मा नहीं मिलता था, जैसा आज हर मसीही को मिलता है। आत्मा के राजाओं, भविष्यवक्ताओं और न्यायियों "के ऊपर आने" की बात कही जाती थी, जिससे उन्हें अपने काम को करने की सामर्थ मिले। परन्तु योएल ने सब के लिए एक दान के रूप में आत्मा दिया जाने की प्रतिज्ञा की और पतरस ने घोषणा की कि वह समय आ गया है। परमेश्वर कुछ नया कर रहा था। प्रेरितों 2:39 संकेत देता है कि यह नया होना केवल "शारीरिक इस्राएल" के लिए ही नहीं, बल्कि यहूदियों और अन्यजातियों सहित "आत्मिक इस्राएल" के लिए भी था। "सब दूर-दूर के लोगों" उन अन्यजातियों को कहा गया है, जो परमेश्वर से दूर थीं (देखें इफिसियों 2:12, 13)।

प्रेरितों 2 अध्याय में आत्मा का आना महत्वपूर्ण है, पर पिन्तेकुस्त की कहानी वहीं खत्म नहीं हो सकती। आत्मा के आगमन के साथ होने वाली इस घटना से लोगों का ध्यान खींचने और उन्हें समझाने के बाद कि इन घटनाओं का क्या अर्थ है, पतरस ने इस अवसर का इस्तेमाल यीशु और उस उद्धार की बात बताने के लिए किया, जिसे वह लाया था।

घोषणा: यीशु पर पतरस का उपदेश (2:22-40)

पिन्तेकुस्त की घटना की पतरस की व्याख्या के बाद आयत 22 उपदेश का आरम्भ करती है। उपदेश के आरम्भ का संकेत "ये बातें सुनो" से किया गया। इस संक्षिप्त परिचय के बाद उसके मुंह से पहले शब्द "यीशु नासरी" निकले थे।

पतरस के प्रवचन की रूपरेखा सरल है। उसने यीशु का परिचय "एक मनुष्य जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण सामर्थ के कामों और चिह्नों से" होने की बात ऐसा तथ्य था, जिससे मनुष्य सुनने वाले मुकर नहीं सके (आयत 22)। फिर उसने घोषणा की कि यीशु को

अनुचित ढंग से मार डाला गया था और इस बात में उसने अपने सुनने वालों पर आरोप लगाया था: ''उसी को ... तुम ने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला'' (आयत 23)। तकनीकी रूप में यीशु को चाहे क्रूस पर चढ़ाने वाले लोग रोमी ही थे, पर यहूदियों की भीड़ विशेषकर धार्मिक अगुओं की ज़िद न होती तो वे उसे क्रूस पर न चढ़ाते। फिर पतरस ने घोषणा की कि यह सब ''परमेश्वर की ठहराई हुई मंशा और होनहार के ज्ञान के अनुसार'' हुआ था। उसने यीशु की मृत्यु को किसी दुर्घटना के रूप में नहीं, बल्कि उत्पत्ति 3:15 से लेकर एक मसीहा के आगे की प्रतिज्ञा के द्वारा आगमन के पूर्व की बातों के जारी रहने के रूप में दिखाया। नया नियम पुराने नियम की कहानी से यीशु की निरन्तरता को दर्शाता है। यह परमेश्वर की बेजोड़ योजना का पूरा भाग था।

इसे दिए जाने वाले स्थान में रखते हुए पतरस की अगली बात कि क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद यीशु मुर्दों में से जी उठा, मुख्य बात लगती है (आयतें 24-35)। प्रमाण के रूप में कि पुनरुत्थान की बात आवश्यक थी। पतरस ने भजन संहिता से दो हवाले दिए। पहले आयतें 25 से 28 में उसने भजन संहिता 16:8-11 में से दोहराया। मुख्य आयत यह बात थी कि ''क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा'' (आयत 27)। इस उद्धरण के बाद पतरस ने दावा किया कि यह कहते हुए दाऊद अपनी बात नहीं कर रहा था, क्योंकि उसकी देह अभी भी मृत थी और दफ़न थी। (स्पष्टतया पतरस के समय तक उसकी कब्र का स्थान लोगों को मालूम था। परम्परागत कब्र जिसे आज लोग देखने जाते हैं, उसकी प्रामाणिकता संदेहास्पद है।) पतरस ने घोषणा की कि दाऊद केवल राजा और चरवाहा ही नहीं, बल्कि नबी भी था, और वह ख्रिस्तुस (अर्थात मसीहा) के पुनरुत्थान की भविष्यवाणी कर रहा था। ''... न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई'' (प्रेरितों 2:31)। फिर पतरस ने भजन संहिता 110:1 का हवाला देते हुए इस बात पर जोर देते हुए मसीहा के परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊंचा किए जाने की बात की (आरम्भिक मसीही लोगों का पसंदीदा ''प्रमाण-कथन''; देखें मत्ती 22:44; मरकुस 12:36; लूका 20:42, 43; इब्रानियों 1:13)। दाऊद ने ''प्रभु'' (परमेश्वर) को किसी दूसरे को जिसे ''प्रभु'' कहा जा सकता है, ''मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं'' (प्रेरितों 2:34, 35) के रूप में दिखाया। इससे पतरस के प्रवचन का चरम बना: ''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (आयत 36)। यीशु अर्थात क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु को ''प्रभु'' और ''मसीह'' कहना उचित था। वह बहाली और उद्धार की इस्राएल की सब आज्ञाओं का पूरा होना था पर उसके अपने ही लोगों ने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया।

पतरस ने अपने प्रवचन का अन्त इस प्रकार करने की सोची थी या उसे सुनने वालों ने उसे बीच में रोक दिया, यह स्पष्ट नहीं है। उसके पहले शब्दों से मन चाहा प्रभाव मिला था, क्योंकि आयत 37 कहती है कि उनके ''हृदय छिद गए'' थे जो गहरे विश्वास और अन्दरूनी पीड़ा का संकेत है। इसी कारण वे पूछने लगे ''हम क्या करें?'' स्पष्टतया वे पूछ रहे थे कि इतने बड़े पाप की क्षमा पाने के लिए वे क्या करें? पतरस का उत्तर स्पष्ट और साफ था: ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम

पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (आयत 38)। उनका प्रश्न बड़े महत्व का था और पतरस का उत्तर स्पष्ट और सीधा था। आज वही प्रश्न पूछकर और उत्तर की ओर ध्यान देकर हम अच्छा करेंगे।

''मन फिराने'' का अर्थ मूलतया मुड़ना है जो पाप से मुड़कर परमेश्वर की ओर मुड़ने का संकेत है। पापियों को अज्ञानता या परमेश्वर की अवज्ञा में रहना छोड़कर उसकी ओर मुड़ना आवश्यक है, जिसमें वे उसकी हर शर्त और पेशकश को मानने को तैयार हों। मन फिराव केवल मन में आई बात नहीं बल्कि एक निर्णय है, जो व्यक्ति को सकारात्मक कार्य में अगुआई करता है पतरस ने कहा, ''... तुम में से हर एक बपतिस्मा ले।'' उसने बपतिस्मे को विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि सबके लिए एक शर्त के रूप में दिखाया। यह हैरान करने वाला नहीं होना चाहिए, क्योंकि उसने बपतिस्मे का उद्देश्य ''पापों की क्षमा'' बताया। यह ''यीशु मसीह के नाम में'' भी है, यानी यह उसके अधिकार से और उस उद्धार पर आधारित है जिसे वह देने की पेशकश करता है।

इस आज्ञा के साथ जुड़ी एक प्रतिज्ञा है: ''... तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' ''पवित्र आत्मा का दान'' आत्मा द्वारा दिया जाने वाला दान नहीं है बल्कि आत्मा स्वयं वह दान है (देखें प्रेरितों 5:32; 8:14-16; लूका 11:10-13)। यह योएल की उस प्रतिज्ञा से मेल खाता है जो सब शरीरों पर आत्मा के बहाए जाने के सम्बन्ध में पौलुस ने दोहराई थी। अब हर किसी के लिए वह आत्मा उपलब्ध है, यानी हर व्यक्ति को मन फिराकर और बपतिस्मा लेने के द्वारा स्वयं उस दान को पाने का निर्णय लेना है। आयत 39 उद्धार और आत्मा के दान की उपलब्धता केवल पिन्तेकुस्त के दिन उपस्थित लोगों के लिए न बताकर, यहूदी विश्वासियों की भावी पीढ़ियों और ''दूर-दूर के सब लोगों'' (यानी अन्यजातियों के लिए) भी कहकर विषय की प्रतिज्ञा को आगे बढ़ाती है। इस बड़ी प्रतिज्ञा में से किसी को भी निकाला नहीं गया। इसी प्रकार पतरस के द्वारा दी गई परमेश्वर की आज्ञा को मानने से भी किसी को छोड़ा नहीं गया।

हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि पतरस ने और क्या कहा होगा, क्योंकि लूका ने बाकी बातों को यह कहते हुए संक्षिप्त कर दिया कि ''उस ने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया'' (आयत 40क)। प्रेरितों के काम पुस्तक के अन्य सभी भाषणों की तरह यह भी एक एक बात का पूर्ण और अंश-अंश संवाद न होकर केवल संक्षेप है। पतरस की ''बहुत और बातों'' में न केवल उद्धार पाने के ढंग की जानकारी थी, बल्कि इन लोगों को उद्धार के दिए अवसर का लाभ उठाने की ताड़ना भी थी। उसने आग्रह किया, ''अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ'' (आयत 40ख)। शुभ समाचार के सब सुनने वालों को परमेश्वर के आने वाले क्रोध से बचने और उद्धार की आशिषों का आनन्द लेने का अवसर दिया गया था, और यही बात आज के लोगों के लिए भी सच है।

यीशु की अगली घोषणा में पतरस की ''मन फिराओ और बपतिस्मा लो'' की सीधी और स्पष्ट पुकार को पूरी तरह से बिगाड़ दिया गया या नज़रअन्दाज़ दिया जाता है। यीशु की सच्चाई बताने के लिए उसे ग्रहण करने के ढंग की सच्चाई भी बताना आवश्यक है, नहीं तो सुनने वालों को विवश करने वाला संदेश देकर छोड़ दिया जाता है जिसमें उन प्रतिज्ञाओं को पाने का कोई तरीका नहीं है। पतरस के अपने शब्दों के बताने के ढंग से बेहतर सुसमाचार की बात मनवाने के लिए हम लोगों को और कैसे बता सकते हैं? हमें लोगों से यीशु को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना

करने का आग्रह करने (ऐसी बात को जो मसीह में उद्धार पाने के लिए प्रेरितों के काम में किसी को नहीं बताई गई थी) कहने के बजाय पिन्तेकुस्त वाले दिन प्रकट किए गए पूर्ण सुसमाचार संदेश को सुनाना आवश्यक था। यदि यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और जी उठने का प्रेरितों का संदेश आज भी मान्य है, तो इसी स्वीकार करने में ''मन फिराए और बपतिस्मा ले'' की प्रेरितों की आज्ञा भी माननी आवश्यक है।

घोषणा का परिणाम: कलीसिया का प्रारम्भ (2:41-47)

आयत 41 आश्चर्यजनक तथ्य बताती है कि लगभग तीन हज़ार लोगों ने पतरस की आज्ञाओं का सकारात्मक रूप में जवाब दिया। उसकी बात ''मान [लेने]'' के कारण कितनी बड़ी संख्या में विश्वासियों को बपतिस्मा दिया गया था। इस आयत में चाहे ''कलीसिया'' शब्द का इस्तेमाल नहीं हुआ (या प्रेरितों 2 में कहीं और, चाहे KJV के अनुवादकों में इस शब्द का डाला है), पर यह स्पष्ट है कि इन लोगों का बपतिस्मा कलीसिया के प्रारम्भ को चिह्नित करता है, क्योंकि मन परिवर्तन करने वाले लोगों के इसके बाद ''कलीसिया'' ही कहा गया है (प्रेरितों 8:1; देखें 5:11)। परन्तु यह किसी भी प्रकार से यीशु के अनुयायियों के नये बने समूह का नाम नहीं है। पवित्र शास्त्र उन्हें ''विश्वासी'' (5:14; देखें 4:32), ''चेले'' (6:1; 9:26), ''पंथ'' (9:2) और ''मसीही'' (11:26) भी कहता है।

सुसमाचार संदेश के सुनाए जाने और इसे उपयुक्त रूप में मानने के कारण कलीसिया बनी। वास्तव में नये नियम के अर्थ में कलीसिया यही है, यानी जिन्होंने सुनाए गए वचन को सुना, विश्वास किया और आज्ञा मानी। आयत 42 में तुरन्त इस समूह को आज्ञा मानने वाले, अर्थात विश्वासियों के आराधना करने वाले समूह के रूप में वर्णित किया गया है: ''वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।'' ''रोटी तोड़ना'' यहां प्रभु भोज को और ''प्रार्थनाएं'' (ESV) व्यक्तिगत प्रार्थना के बजाय एकत्र हुई कलीसिया के प्रार्थना करने को कहा गया है। आयतें 43-46 संकेत देती हैं कि इतनी बड़ी संख्या में होने के बावजूद ये विश्वासी संगति में एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए थे जिसमें सब की भौतिक आवश्यकताएं पूर्ण रूप में समूह की उदारता से पूरी होती थी। आरम्भिक कलीसिया ने एक अद्भुत नमूना बना दिया था जिसे आज की कलीसिया माने तो अच्छा होगा। आयत 47 दिखाती है कि यह उनकी जीवनशैली बन गई थी और इस कारण प्रतिदिन लोगों के मन परिवर्तन हो रहे थे। अन्य शब्दों में पिन्तेकुस्त वाले दिन की सुसमाचारीय घटनाएं केवल उसी दिन तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे आज भी जारी हैं।

यहां कलीसिया के विषय को विस्तार से बताने के लिए कागज की कमी हमें अनुमति नहीं देगी। परन्तु यह अध्याय इस पर कुछ आम गलत धारणाओं को मिटा देता है कि कलीसिया क्या है।

पहले तो प्रेरितों 2 अध्याय में उद्धार और कलीसिया के बीच सम्बन्ध इस बात को स्पष्ट करता है कि कलीसिया मसीही विश्वास का वैकल्पिक परिशिष्ट नहीं है, चाहे आम तौर पर इसे ऐसा ही माना जाता है। जैसा कि यहां प्रेरितों के काम की पुस्तक में है, शेष नये नियम में, उद्धार पाने का अर्थ कलीसिया में होना आवश्यक है; अकेले विश्वासी की कोई अवधारणा नहीं है

जो संगति, शिक्षा और उस प्रोत्साहन की आवश्यकता को न मानें जो कलीसिया से मिलता है।

दूसरा स्पष्टतया कलीसिया अगुओं का धर्मतन्त्र नहीं है। प्रेरितों 2 में ऐसा कोई प्रबन्ध नहीं था, चाहे कलीसिया वहां भी थी। आज आम तौर पर हम लोगों को धर्मतन्त्रीय अगुओं के निर्णय की बात करते हैं कि "कलीसिया" क्या मानती या करती है।

तीसरा, कलीसिया मानवीय पहल या मानवीय परम्परा पर आधारित संगठन नहीं है। नये नियम की कलीसिया परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोग हैं, जो यीशु की खुशखबरी सुनाए जाने से और उस संदेश की आज्ञा मानने से बनते हैं। यह पूर्णतया परमेश्वर की पहल से होता है न कि मनुष्य के निर्णय से।

अन्त में कलीसिया लोगों का उद्धार नहीं करती। आयतें 41 और 47 संकेत देती हैं कि परमेश्वर कलीसिया में "मिलाता" है यानी उद्धार पाए हुए लोग कलीसिया में हैं, पर लोगों का उद्धार इसलिए नहीं हुआ है कि वे कलीसिया में हैं। उद्धार का कारण सुसमाचार है जिसका परिणाम कलीसिया बनता है। हमें इस अन्तर पर ध्यान देना आवश्यक है और उद्धार को कभी भी ईश्वरीय पहल के बजाय मानवीय पहल नहीं मानना चाहिए।

सारांश

पिन्तेकुस्त के दिन नये युग यानी "अन्तिम दिनों" के मसीही युग का आरम्भ हुआ। यीशु के दोबारा आने तक मसीही लोग "इन अन्तिम दिनों" (इब्रानियों 1:2) में अपने लोगों के लिए उद्धार की परमेश्वर की योजना के अन्तिम रूप में पूरा होने की प्रतीक्षा करेंगे। अभी हमें नये इस्राएल (देखें गलातियों 6:15, 16) अर्थात यीशु मसीहा द्वारा छुड़ाए गए विश्वासियों के समुदाय यानी परमेश्वर के आत्मा के द्वारा सामर्थ दिए और अपनी कलीसिया बनाने के विशेषाधिकार पाए लोगों के रूप में रहने का अवसर मिला है।

टिप्पणी

[1]परमेश्वर की उपस्थिति का संकेत देते हुए पुराने और नये दोनों नियमों में आंधी और आग का इस्तेमाल किया गया है (देखें निर्गमन 19:18; 1 राजाओं 19:11, 12; होशे 13:15)।

प्रेरितों 2 और अन्य स्थानों में "भाषाएं"

पिन्तेकुस्त के दिन बोली गई "भाषाओं" की प्रकृति पर बड़ी चर्चा और बहस का मुख्य बिन्दु प्रेरितों 2 अध्याय है। एक प्रश्न की यही घटना प्रेरितों की पुस्तक में बाद में हुई या नहीं है और इसका उल्लेख 1 कुरिन्थियों 12-14 में है।

यूनानी भाषा के शब्द "*glossa*" का अर्थ केवल "जीभ" है। अंग्रेज़ी भाषा की तरह इसका इस्तेमाल बोलने के अंग या प्रतीकात्मक ढंग में "भाषा का संकेत देने के लिए किया जा सकता है।"

प्रेरितों 2 अध्याय यह स्पष्ट कर देता है कि प्रेरितों के द्वारा बोली गई भाषाएं वास्तव में बोली गईं थीं जो उनके लिए पराई थीं। लूका ने भी इस शब्द का इस्तेमाल किया है (*dialektos*;

आयत 6) जिससे हमें अंग्रेज़ी भाषा का शब्द ''dialect'' मिला है और जो स्पष्टतया भाषा का अर्थ देता है। इस अवसर पर उपस्थित लोगों और विभिन्न भाषाओं के स्थानीय बोलने वालों की सूची के बाद आयत 8 में फिर यह शब्द आता है। यह संकेत देते हुए कि प्रेरितों को आश्चर्यकर्म के द्वारा बोलने की सामर्थ देने वाली ''बोलियां'' समझ आने वाली भाषाएं ही थीं, प्रेरितों 2 में ग्लौसा और डायालेक्टोस शब्दों को अदल-बदलकर इस्तेमाल किया गया है।

नये नियम में बाद में ''भाषाओं'' के आने के बारे में क्या विचार है ? प्रेरितों के काम पुस्तक में हमें केवल दो और जगह ऐसा मिलता है (प्रेरितों 10:46 में कुरनेलियुस और उसका घराना था और 19:6 में इफिसुस के बारह चेले)। इनमें से कोई भी घटना प्रेरितों 2 जितनी स्पष्ट नहीं है, पर यह मानने का कोई कारण नहीं कि बाद के इन वचनों में उससे अलग भाषाएं बोली गई होंगी। बाइबल की व्याख्या करने का अच्छा नियम यह है कि स्पष्ट बात (जैसे प्रेरितों 2 में) को अस्पष्ट बात की व्याख्या करने दें (प्रेरितों 10; 19)।

नये नियम का एकमात्र और वचन जहां भाषाओं की चर्चा की गई है 1 कुरिन्थियों 12-14 है। आम तौर पर यह दावा किया जाता है कि कुरिन्थुस में बोली जानी वाली भाषाएं मानवीय भाषाएं न होकर किसी प्रकार का बुड़बड़ाना था, चाहे इन तीनों अध्यायों में कहीं भी ऐसा स्पष्ट नहीं बताया गया। इसलिए बेहतर यही है कि स्पष्ट वचन को अस्पष्ट वचन की व्याख्या करने दें। इसके अलावा 1 कुरिन्थियों 14:9-11 में भाषाओं के सम्बन्ध में, ''भाषा'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है जो संकेत दे सकता है कि कुरिन्थुस के लोगों में बोली जाने वाली भाषाएं प्रेरितों 2 अध्याय वाली बोलियों की तरह ही वास्तविक मानवीय भाषाएं थीं।

इन में से कोई भी वचन यह सुझाव नहीं देता कि भाषाएं बोलना किसी भी प्रकार से उद्धार का चिह्न या पूर्व शर्त है।

प्रेरितों के काम में ''बपतिस्मा'' व ''आत्मा''

प्रेरितों 2:38 में कोई सवाल नहीं है कि पवित्र आत्मा के पाने को मन फिराव और बपतिस्मे के समय होने के रूप में दिखाया गया। परन्तु प्रेरितों के काम में कुछ घटनाओं, आत्मा के दान का उल्लेख बपतिस्मे से पहले बिल्कुल नहीं है, चाहे बपतिस्मा हो चुका है।

उदाहरण के लिए प्रेरितों 10 में एक दर्शन के उत्तर में, पतरस कुरनेलियुस नामक रोमी सूबेदार के घर गया। वहां पहुंचने पर उसने कुरनेलियुस और उसके घराने और उसके मित्रों में मसीह का प्रचार किया। पतरस के संदेश के बीच, आयतें 44 से 46क कहती हैं, ''पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुनने वालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति-भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना।'' फिर उन सब को बपतिस्मा दिया गया था। घटनाओं का यह क्रम प्रेरितों 2:38 में दिए क्रम से भिन्न क्यों था, जहां आत्मा का दान की प्रतिज्ञा बपतिस्मा लिए जाने के बाद की गई। उसका उत्तर इर घटना की विलक्षण परिस्थितियों में मिलता है। यह ध्यान दिलाता है कि यीशु के प्रेरितों में से एक ने पहली बार जान-बूझकर अन्यजातियों में सुसमाचार का प्रचार किया था, यानी ऐसा काम जिसका अनुमान आरम्भिक मसीही लोगों ने नहीं लगाया था। यह

इस तथ्य से दिखाया जाता है कि बाद में पतरस को यरूशलेम में अन्यजातियों को वचन सुनाने और बपतिस्मा देने के अपने कार्यों का जवाब देने के लिए बुलाया गया था (प्रेरितों 11:1-18)। आत्मा का आना और भाषाओं का आश्चर्यकर्म से प्रदर्शन "अन्यजाति पिन्तेकुस्त" जैसा देने अर्थात यहूदी मसीही लोगों में बिना किसी शर्त के यह प्रमाणित करने के लिए आवश्यक था कि अन्यजातियों के लोग परमेश्वर को स्वीकार्य हैं (10:34, 35; 10:47 और 11:17 में देखें पतरस की व्याख्या)।

इसी प्रकार प्रेरितों 8:14-17 में आत्मा का आना बपतिस्मे के समय या इससे पहले नहीं हुआ बल्कि प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा, इसके बाद किसी समय हुआ था। फिर एक विलक्षण परिस्थिति थी जो प्रेरितों 2:38 में ठहराए नमूने से लेने के लिए आवश्यक थी। इस प्रकार से आत्मा पाने वाले लोग अर्ध-यहूदी यानी सामरी लोग थे जिन्हें कम से कम और शायद इससे भी बढ़कर अन्यजातियों की तरह ही उनके समकालीन यहूदी तुच्छ मानते थे। यहूदी मसीही लोगों को विश्वास दिलाने के लिए कि सामरियों को भी परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया जा सकता है यदि वे मसीह की ओर मुड़ें, परमेश्वर की स्वीकृति का (और प्रेरितों की) विशेष प्रदर्शन आवश्यक था। परमेश्वर की स्वीकृति का चिह्न प्रेरितों के हाथ रखने की प्रासंगिकता और उसके बाद आत्मा के आगमन के द्वारा मिला।

पानी के बपतिस्मे और पवित्र आत्मा के मिलने के बीच सम्बन्ध के नये नियम के अन्य संकेत यूहन्ना 3:5 और तीतुस 3:5 में दिए गए हैं।